Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

'संचार के आधुनिक साधन मोबाईल' का युवाओं के सामाजीकरण पर प्रभाव का अध्ययन कसरावद शहर के महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. उषा यादव*

* सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, कसरावद, जिला- खरगोन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – वर्तमान समय में मोबाईल फोन दुनिया में पहले की संचार तकनीकों जैसे- टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्रो आदि की तुलना में तेजी से फैल रहे है। युवा वर्ग के बीच इस डिवाइस का उपयोग और भी ज्यादा लोकप्रिय हो गया है। और इसके इस्तेमाल पहुँच, सुक्ष्म समन्वय, सुरक्षा और मुक्ति के साधन के रूप में किया जाता है। मोबाईल फोन युवाओं और उनके साथियों के समूहो, माता-पिता और बच्चो के बीच एक सीधा संचार चैनल प्रदान करते है। इसलिए यह डिवाईस साथियों और परिवार के साथ-साथ सामाजिक सम्पर्क व बंधन को भी बडाता है। मोबाईल नये-नये फंक्शन के साथ युवाओं को सीखने के लिए प्रेरित कर समाजीकरण की प्रक्रिया को प्रभावी बनाता है। युवाओं के समाजीकरण पर मोबाईल फोन के प्रभाव अध्ययन करने के लिए शासकीय महाविद्यालय कसरावद के अध्ययनरत स्नातक स्तर के विद्यार्थीयों का द्वैव निदर्शन पद्धति से चुनाव कर शोध सम्बधी आकडे एकत्रित कर उनके विश्लेषण के परिणाम युवाओं के समाजीकरण पर मोबाईल फोन पर प्रभाव को उजागर करते है।

शब्द कुंजी –सामाजीकरण,युवा, संचार के आधुनिक साधन मोबाईल फोन इत्यादि ।

प्रस्तावना – मानव शिशु जन्म के समय किसी भी मानव समाज में भाग लेने योग्य नही होता है। वह केवल एक प्राणीशास्त्रीय इकाई के रूप में इस संसार मे आता है जो केवल रक्त, मांस एवं हडिडयों से बना एक जीवित पुतला मात्र होता है। उसमे किसी प्रकार के न तो गुण होते और नही अवगुण होते है। वह न तो सामाजिक होता है,न असामाजिक और न समाज विरोधी ही । समाज के रीति – रिवाजों, प्रथाओ,मुल्यों एवं संस्कृति से वह अनभिज्ञ होता है । वह नही जानता कि किसके प्रति कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए और समाज उससे क्या अपेक्षाए रखता है, किन्तु वह कुछ विशिष्ट शारिरिक क्षमताओं के साथ पैदा होता है, इन क्षमताओं के कारण ही वह बहुत कुछ सीख लेता है, समाज का क्रियाशील सदस्य बन जाता है और संस्कृति को ग्रहण करता है, लेकिन सीखने की क्षमता सामाजिक सम्पर्क से ही विकसित होती है उदाहरणार्थ, मानव में भाषा का प्रयोग करने की क्षमता और अपने विचारो को अभिव्यक्त करने की क्षमता होती है जो समाज के सम्पर्क से ही व्यावहारिक रूप धारण करती है । सामाजिक सम्पर्क के कारण ही व्यक्ति समाज के रीति – रिवाजों, प्रथाओ, मूल्यों, विश्वासों, संस्कृतिएवं सामाजिक गुणों को सीखता है और एक सामाजिक प्राणी का दर्जा प्राप्त करता है । सामाजिक सीख की इस प्रकिया को समाजीकरण कहते है ।

इस प्रकार समाजीकरण की प्रक्रिया प्राणीस्त्रीय प्राणी को सामाजिक प्राणी में बदल देती है , मानव को पशु स्तर से ऊचा उठाकर मानव समाज में सम्मिलित करती है । अत:यह मानव को मानव की संज्ञा प्रदान करने वाली प्रक्रिया है ।

वर्तमान युग सूचना क्रांति का युग माना जा रहा है । जिसमें सूचनाओं कों बडे ही प्रभाव पूर्ण रूप से एक स्थान से दुसरे स्थान तक पहुचाया जा रहा है । इस सूचना क्रांति ने मानव के पूराने सूचना स्त्रोतो को समाप्त ही कर दिया जो किसी समय में सूचना पहुचाने के मुख्य कारगर साधन के रूप में उपयोग में लाए जाते थे उनकी जगह अब आधुनिक साधनो जैसे इन्टरनेट, टीवी ,समाचार पत्र- पत्रिकाएँ, और इन सभी से अत्यधिक प्रभावशील एवं उपयोग में सर्वाधिक आसान मोबाईल फोन ने ले ली है । जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी सूचनाएँ, विचार, भावनाए, कार्यो को अपने दोस्तो, परिवार के सदस्यों, कार्य क्षेत्र पर कार्यरत व्यक्तियों आदि को बहुत ही आसानी से कही से भी सूचनाए पहुचाते है। जिस कारण मोबाईल फोन आज सर्वाधिक उपयोग और उपभोग किया जाने वाला आधुनिक साधन बन गया है।जो मानव जीवन को प्रभावित कर मानव की दिनचर्या का एक अहम हिस्सा बन गया है। विशेष रूप से युवाओं के समाजीकरण के बारे में यह एक सक्रिय और सामूहिक प्रक्रिया है। जहॉ माता- पिता, साथी, शैक्षणिक संस्थान और मीडिया इस प्रक्रिया में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। एक युवा, वयस्क दुनिया में सम्मिलित होने के लिए किसी समाज के मूल्यों मानदण्डो और विश्वासों को कैसे आत्मसात करते है। किशोरो की मुक्ति पारिवारिक दायरे से स्वतंत्र होने और अपने स्वयं के विश्वासों और मूल्यो के साथ स्वतंत्र सामाजिक अभिनेताओ के रूप में अपनी पहचान स्थापित करने की प्रक्रिया है।

हॉलाकि पिछले कुछ दशकों मे मोबाईल फोन पर अध्ययन तेजी के लोकप्रिय हुए है परन्तु युवाओ के समाजीकरण पर मोबाईल के प्रभावों का अध्ययन अनुसंधान का एक अपेक्षाक्रत नया क्षेत्र हैं।

समाजीकरण– समाजीकरण को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जिसके माध्यम से हम किसी समाज या सामाजिक

समूह के तौर –तरीको को सीखते है। ताकि हम उस समाज के क्रियाशील सदस्य बनकर कार्य कर सकें।

युवा–युवास्था या किशोर अवस्था का अंग्रेजी शब्द Adolescence से लिया गया है जो मूल रूप से लैटिन भाषा का शब्द है। जिसको अर्थ है 'बडा होना' या 'परिपक्व होना' या 'वयस्कता में बढना' इस अवस्था को मानव विकास में एक संक्रमण कालीन चरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जहॉ जैविक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और समाजिक विशेषताए आमतोर पर बच्चो जैसी मानी जाने वाली विशेषताओं से बदलकर वयस्क जैसी मान जाने वाली विशेषताओं मे बदल जाती है।

मानव का सामाजीरण उसके आसपास व्याप्त पारिवारिक पर्यावरण, सामाजिक पर्यावरण, भौतिक पर्यावरण और मानव द्धारा उपयोग की जाने वाली वह प्रत्येक वस्तु जिससे उसका जीवनयापन सम्भव हो, पर निर्भर करता है।

मोबाईल फोन एक ऐसा ही आधुनिक साधन है जिससे मानव का न केवल दिन बल्की हर पल प्रभावित होता है। और मानव प्रजाति में सर्वाधिक युवा पीढी इस संचार क्रांति के आधुनिक साधन मोबाईल से प्रभावित हो रही है। जिनका एक पल भी बिना मोबाईल फोन के नही गुजरता और ना ही कोई कार्य कर पाते है। जिस पर केवल उनका वर्तमान बल्कि भविष्य भी निर्भर करता है। इतिहास साक्षी है जब भी किसी साधन या वस्तु चाहे वह प्राकृतिक हो या मानव निर्मित ने अत्यधिक प्रभावित किया जाता है तो वह उसके सामाजीकरण या समाज का एक अभिन्न अंग बन जाता है। यही तथ्य वर्तमान समय में मोबाईल पर चरितार्थ होता दिखाई दे रहा है अगर उसका अत्यधिक उपयोग किया जाता है और उसने मानव को बहुत अत्यधिक प्रभावित किया है।

संचार के आधुनिक साधन – अपने विचारों, बातों, इच्छाओं, भावनाओं को समाज में, समूहो में परिवार में, या व्यक्तियों को प्रभावी व नवीन तरीको से पहुचाने के साधनो को हम संचार के आधुनिक साधन कहते है।

मोबाईल–मोबाईल को 'हिन्दी में दूरसंचार यंत्र कहते है।' अर्थात दो संदेश वाहको या संदेश वाहक और संदेश लेने वाले के मध्य दुरी कितनी भी हो, एक दुसरे को संदेश बहुत ही सरल–सहज रूप से पहुच जाता है।

अध्ययनरत विद्यार्थी–अध्ययनरत विद्यार्थी युवाओं का वह वर्ग है जो अपने जीवन को दिशा देने के लिये अपने सामाजीकरण की प्रक्रिया में शिक्षा की भूमिका को मजबूत करने के लिए किसी भी शासकीय या अशासकीय शिक्षण संस्थान से ज्ञानार्जन कर रहे है।

3. अध्ययन पद्धति :– प्रस्तुत शोध–पत्र में शोध अध्ययन पद्धति निम्नानुसार निर्धारित की गई है।

1. अध्ययन पद्धति :–स्वउद्देश्य पूर्ण निदर्शन पद्धति शोध–पत्र की अध्ययन पद्धति है।

2. अध्ययन का समग्र :–अध्ययन का समग्र शासकीय महाविद्यालय कसरावद में अध्ययनरत विद्यार्थियों को समग्र निर्धारित किया गया है।

3. अध्ययन की इकाई :– शासकीय महाविद्यालय कसरावद में अध्ययनरत विद्यार्थी अध्ययन की इकाई है।

4. तथ्यो का संकलन :– तथ्यो का संकलन प्राथमिक व द्धितीयक पद्धतियों के माध्यम से किया गया है।

अ. प्राथमिक स्त्रोत :–साक्षात्कार अनुसूचि के माध्यम से प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया है।

ब. द्धितीयक स्त्रोत :–पूस्तके पत्र–पत्रिकॉए व इन्टरनेट के माध्यम से द्धितीय तथ्यों को एकत्रित किया गया है।

5. शोध प्रक्रिया :– शोध–पत्र को पूर्ण करने के लिए सर्वप्रथम तथ्यों के संकलन के लिए द्धितीयक स्त्रोतों का उपयोग किया गया , इसके पश्चात एक साक्षात्कार अनुसूचि का निर्माण कर 50 अध्ययनरत विद्यार्थीयों से साक्षात्कार अनुसूचि के विकल्पयुक्त प्रश्नों के उत्तरों को प्राप्त किया गया है। जिसके बाद प्राप्त तथ्यो को मास्टर–चार्ट के माध्यम से सांख्यिकीय रूप प्रदान कर कुछ मुख्य प्रश्नों का चित्रमयी प्रदर्शन किया गया है।

निस्कर्ष :–प्रस्तुत शोध –पत्र में विकल्पयुक्त प्रश्नो के निस्कर्ष निम्नलिखित है

1. प्रस्तुत शोध विषय के अनुसार प्रश्न पूछा गया कि आप मोबाईल का प्रयोग किस आयु से कर रहे हे पर सर्वाधिक 95.6% उत्तरदाताओं ने कहॉ कि वे 13 वर्ष की उम्र से मोबाईल का प्रयोग कर रहे है।

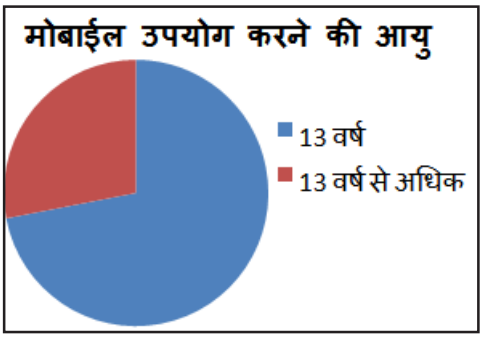

2. प्रस्तुत शोध विषय के प्रश्न मोबाईल उपयोग का कारण पूछने पर सर्वाधिक 66.6% ने कहॉ कि वे अपनी व्यक्तिगत रूचि के कारण मोबाईल रखते है , 13.4% कहॉ कि उनके दोस्तो के पास मोबाईल है इसलिए उन्होने भी मोबाईल लिया है। 3.7% ने कहॉ कि उन्होने अपने अभिभावकों की इच्छा से मोबाईल लिया है। और 16.3% ने उत्तर दिया कि वे मोबाईल का प्रयोग केवल संचार उपकरण के रूप में करते है।

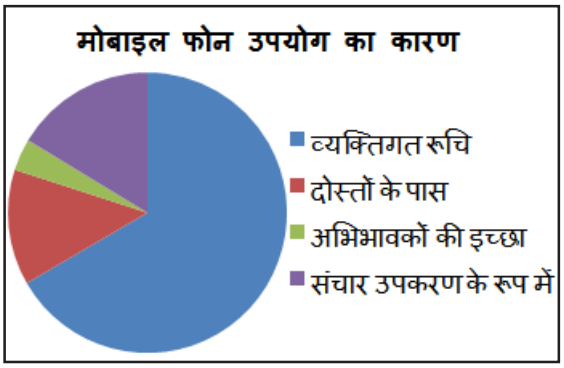

3. प्रस्तुत शोध विषय के अनुसार प्रश्न पूछा गया कि क्या युवाओं पर मोबाईल फोन का प्रभाव हैपर सर्वाधिक 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार कहॉ गया कि युवाओं पर मोबाईल फोन का प्रभाव अत्यधिक रूप से है,क्योकि वर्तमान समय में युवावर्ग के पास यदि मोबाईल फोन न हो तो वह अपने आप को अधुरा व असहाय महसूस करते है। साथ ही वे अपना सर्वाधिक समय मोबाईल पर विभिन्न प्रकार के कार्यो को कर आपना समय व्यतीत करते है। जबकि 13 प्रतिशत का कहना है कि मोबाईल फोन का युवाओं पर आंशिक रूप से प्रभाव है। क्योकि आज का युवा अपने भविष्य की चिन्ता में इस प्रकार लगा रहता है कि वह नये आधुनिक साधनो को भी भूल जाता है।

और अपने ही कार्यो में व्यस्त रहता है। 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं मानना है कि युवा वर्ग पर वर्तमान समय में मोबाईल फोन का प्रभाव बिलकुल नहीं हुआ है क्योंकि उनके अनुसार युवा वर्ग के पास मोबाईल फोन से भी ज्यादा आधुनिक साधन उप्लब्ध है जिसके माध्यम से वे मोबाईल का भी कार्य कर लेते है, या उन्हे आवश्यकता ही नही पडती। सबसे कम 10 उत्तरदाताओं ने प्रस्तुत प्रश्न पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई।

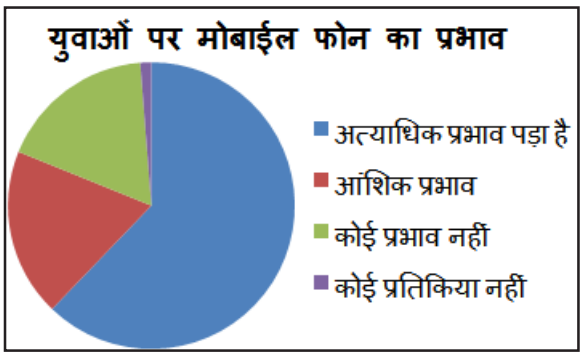

4. प्रश्न पूछा गया कि क्या मोबाईल फोन के द्वारा सामाजीकरण कि प्रक्रिया पर प्रभाव पडता है। पर सर्वाधिक 44 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमती जताई है, उत्तरदाताओं का कहना है,कि वर्तमान में युवाओं का सामाजीकरण मोबाईल फोन के माध्यम से निर्धारित हो रहा है। आज मोबाईल फोन केवल सूचनाओं के आादान प्रदान का ही साधन मात्र नहीं रह गए है, बल्कि मोबाईल के माध्यम से आज व्यक्ति मनोरंजन के साथ ज्ञान अर्जन भी कर रहे है। जिससे उनके कार्य आसान होते जा रहे है। 38 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आंशिक रूप से सहमति जताई है क्योकि उत्तरदाताओं के अनुसार वर्तमान परिस्थितियों में मोबाईल का युवाओं के जीवन में महत्व बढा है पर उनके सामाजिक पहलु विषय पर व्यापक रूप से प्रभाव नहीं पडता। शेष 18 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना है कि मोबाईल फोन से किसी भी प्रकार का कोई भी प्रभाव समाजीकरण पर नही पडता क्योकि उत्तरदाता मानते है कि मोबाईल फोन केवल संचार के साधन से अधिक कुछ नही है, जिसका उपयोग केवल आवश्यकता पडने पर ही किया जाता है।

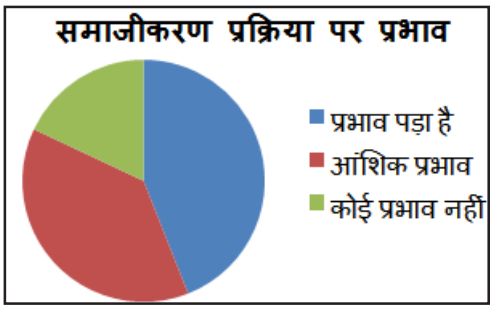

5. मोबाईल फोन के माध्यम से मानव विकास में किस प्रकार के परिवर्तन आए है, पर सर्वाधिक 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार मोबाईल फोन के आने से मानव की दिनचर्या में आधुनिकता का प्रभाव बढा है साथ हि बाहरी दुनिया से लगातार जुडा रहता है, जिससे उसे प्रत्येक घटना की जानकारी बडी तेजी से व सटीक प्राप्त हो जाती है। जबकि 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि मोबाईल फोन के द्वारा व्यक्ति में तकनिकी ज्ञान व उसकी समझ का विकास हुआ है जिससे वह आज अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग बडी आसानी से कर सकता है, जो उसके बौद्धिक विकास के लिए अति महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। 26 प्रतिशत का कहना है,कि मोबाईल के माध्यम से मानव समाज में दुरिया कम हुई है जिससे वे अपने परिजनो के हरदम नजदीक रहते है, और हर समय उनकी खबर भी प्राप्त हो जाती है। 24 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार व्यक्ति के विकास को मोबाईल फोन ने किसी भी तरीके से प्रभावित नही किया है।

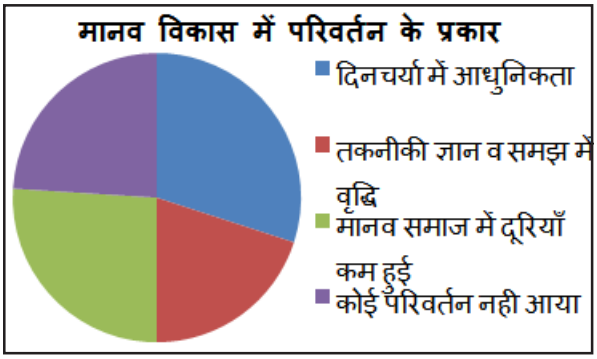

सुझाव : वर्तमान सर्वेक्षण और अध्ययन के परिणामों को ध्यान में रखते हुए कुछ सुझाव इस प्रकार है :

1. मोबाईल का प्रयोग इस प्रकार होना चाहिए कि वह उपयोगकर्ता के बीच सराहनीय और उचित साबित हो।
2. जब युवा मोबाईल फोन से जुडते है या उनका उपयोग करते है तो उन्हें यह ध्यान रखना चाहिए कि वह केवल सुरक्षित सोशल नेटवर्किंग साइट का ही उपयोग करें।
3. मोबाईल का प्रयोग रचनात्मक उद्देश्यों के लिए किया जाना चाहिए।
4. मोबाईल के अधिक प्रयोग के नकारात्मक परिणामों को कम करने के लिए शिक्षण संस्थानों को कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने चाहिए।
5. अभिभावको और शिक्षकों को युवाओं पर नजर रखनी चाहिए कि वह मोबाईल का उपयोग किस प्रकार की गतिविधि के कर रहे है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी - रविन्द्र नाथ मुखर्जी।
2. सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी - डी.एन. श्रीवास्तव।
3. समाजशास्त्र के मूल तत्व - गुप्ता एण्ड शर्मा।
4. सामाजिक विचारक - रविन्द्र नाथ मुखर्जी।
5. सामाजिक विचारक का इतिहास - रामनाथ शर्मा।
6. Arnett, J.(1995) Adolescent's uses of Media For Sely-socialzation,journl of Youth and Adulescence,
7. Chen,Y.F. (2009 may) The Mobile Phone and Socialization: Family vs Friends.
8. Kalogeraki Stefania,Papadaki Morina. The Impact of Mobile Phones on Teengers Socialization and Emancipaton .University of Crete Greece.

****